एंगस मैक्डोनाल्ड

एक कलाकार की तीर्थयात्रा

डेनियल बी. हेबर

नई दिल्ली के मुख्य बाजार पहाड़गंज में गायों, रिक्शों, पटरी वालों और शालों में लिपटे लोगों की भीड़ के बीच अपनी राह चली जाती छोटे कद की, चमकीले सुनहरे बालों वाली वह अमेरिकी औरत तमाम औसत कमखर्च सैलानियों जैसी ही दिखती है। लेकिन चलते हुए उसकी निगाह नीची रहती है- उसकी आंखें सड़क पर कागज के टुकड़ों को ढूंढती हैं जिन्हें वह अपने कंधे पर टंगे झोले में डाल लेती है।

लॉस एंजिलीस की कोलाज कलाकार मार्जी शार्फ से मेरी पहली मुलाकात 2002 की गर्मियों में हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला के एक ढाबे में हुई थी जहां हमारे जैसे बहुत से विदेशी सैलानी बैठते थे। वह भारत के प्रेम में डूबी थी और अपनी यात्रा के दौरान उसने ढेरों 'यादगारें' और बिंब जमा कर लिए थे। उसके किराए के कमरे (जो उसका स्टूडियो भी था) पर उसकी यादगारें देखने को मिलीं: औसत भारतीय उन्हें सड़क से बटोरा गया कूड़ा ही मानता- सिगरेट, बीड़ी, च्यूइंग गम के रैपर, माचिसें, अगरबत्ती के पैकेट, टी-बैग के टैग, अखबार के टुकड़े.....। यह ''सड़क से मिला कच्चा माल'' था जिसे वह रंगीन कोलाज में बदल देने वाली थी।

मार्जी ने खुशी-खुशी करीब चौबीस-पच्चीस कोलाज अपने कमरे में लगे पलंग पर सजा कर मुझे दिखाए। कुछ ही महीने बाद मैंने इन कोलाज को काठमांडो की एक आर्ट गैलरी में देखा और मार्जी को बी.बी.सी. टेलिविजन पर।

एशिया में यात्रा करते वह ऐसी ही क्षणभंगुर चीजें जमा करती, अद्भुत कोलाज रचती और मित्र बनाती रहीं। दस डॉलर (करीब साढ़े चार सौ रुपये) प्रतिदिन के बजट पर जीने के लिए कभी-कभी वह अपने कोलाज बेचती हैं या उनके बदले कुछ सामान ले लेती हैं। अपना नवीनतम डिजिटल कैमरा उन्हें ऐसी ही एक वेबसाइट से मिला।

फेंक दिए गए कागजों से कोलाज तैयार करने की शुरूआत 1990 के दशक में उन दिनों हुई जब वह तिहुआना, मैक्सिको में कलासाधना कर रही थीं। अपने कलाकारीय वक्तव्य में वह लिखती हैं, ''शुरू में मैं बोतलों के ढक्कन, कीलों जैसी उन साधारण फेंक दी गई चीजों को जमा करती थी जो संसार में कहीं भी सड़क पर पड़ी मिल जाती हैं। मेरे लिए यह समकालीन सभ्यता के प्रतिबिम्ब थे-भारी मात्रा में उत्पादन, इस्तेमाल करो और फेंको किस्म की

" मैं सामग्री इकट्ठी करने के लिए हर दिन सड़कों के इर्दगिर्द घूमती और हर दिन अपनी कला को आकार देती। "

फोटोग्राफ: साभार मार्जी शार्फ

पीसेक्सक्यूटाइगर

सड़क किनारे से एकत्र सामग्री का इस्तेमाल कर मार्जी शार्फ हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में कोलाज बनाती हुईं।

द काइट फ्लायर्स

नाइट जर्नी

चीजों, पैकेजिंग, प्रतियों और दोहरावों से भरे वैश्वीकरण के युग के प्रतिबिंब।

मैं रोज अपनी सामग्री बटोरने के लिए सड़क पर उतरती और रोज कलाकृतियां बनाती। फिर एक दिन मैंने जरा मजबूत किस्म के जूते पहने और सड़क पर कुछ और किस्म की चीजें जमा करना सीख लिया। मैं कागज की चिंदियां, सिगरेट के पैकेट, माचिसें, टॉफी-अगरबत्ती के रैपर, टिकट के टुकड़े आदि जमा करके कोलाज बनाने लगी। एशिया जाने से पहले मैंने कम वजन वाली सामग्री का चयन करना सीख लिया था जिसे यात्रा में ले जाया जा सके।''

वह समझाती हैं कि ज्यादातर कोलाज 10 सेमी ×10 सेमी के हैं। वह कहती हैं, ''मैं उन्हें जानबूझकर छोटा बनाती हूं, उन्हें साथ लेकर घूमना होता है न।'' वह उन्हें एक छोटे से सूटकेस में रखती हैं। नेपाल में चोरों ने उनका सूटकेस यह सोचकर उड़ा दिया कि उसमें कीमती सामान होगा। लेकिन जंगल में जब उन्होंने सूटकेस खोला तो ''बेचारे पुराने कागजों और तस्वीरों से भरे लिफाफे देखकर बौखला गए होंगे,'' मार्जी हंस-हंस कर बताती हैं। बाद में उनका सूटकेस होटल के एक कर्मचारी को मिल गया और उसने उनकी अमानत उनके हवाले कर दी।

अपनी कोलाज शृंखला,''रॉ मैटीरियल: फ्रॉम द रोड इन एशिया'' को मार्जी काम करते-करते सफर, एक कलाकार की तीर्थयात्रा मानती हैं। वर्ष 2003 में अमेरिका लौटने पर वह अपनी कृतियां लॉस एंजिलीस की कलाकार बिरादरी को दिखना चाहती थीं जिसका रवैया बहुत सहयोगी रहा। 'फॉरेन एंड

" मैंने कागज के टुकड़े, सिगरेट के खाली पैकेट, माचिस की डिबिया और टिकटों के टुकड़ों का इस्तेमाल कर कोलाज बनाए। उन्हें यात्रा में साथ रखने के लिए उनका आकार छोटा रखा। "

पुश

जोकर हार्ट

सुपर लोटस

देल्ही टाइगर

फैमिलियर' के नाम से उन्होंने एस. ई. बार्नेट के साथ ओवरटोन्स गैलरी में अपने कोलाज की प्रदर्शनी की। उनकी एक और प्रदर्शनी कुछ महीने बाद इसी शहर की एल2कंटेंपररी गैलरी में लगेगी। सड़कों पर फिरते काम करने के क्रम में मार्जी पिछले साल वियतनाम और भारत की यात्रा पर फिर एशिया लौटीं। हाल ही में उन्होंने नई दिल्ली के अमेरिकन एम्बेसी स्कूल में एक कला कार्यशाला संचालित की। वर्ष 2003 में वह नई दिल्ली के संस्कृति केंद्र में आर्टिस्ट-इन-रेजिडेंस रहीं।

मार्च में मार्जी दिल्ली में थीं, तबीयत ढीली रहने लगी तो उन्हें लगा कि शायद उन्हें भी 'डेल्ही बेली' के नाम से कुख्यात पेचिश ने जकड़ लिया है। लेकिन जांच करवाने पर पता चला कि उन्हें अंडाशय का कैंसर है। दिल्ली के धर्मशिला कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में उनकी केमोथेरपी चल रही है, उसी बीच वह पहाड़गंज के गरीब बच्चों के लिए लेखन कार्यशालाएं भी चलाती रहती हैं।

कभी भी सफर पर निकल पड़ने की तैयारी में मार्जी यूं तो अपने मजबूत जूते अब भी चाकचौबंद रखती हैं लेकिन अब वह कठिन यात्राएं नहीं कर पातीं। किसी अज्ञात कवि की पंक्तियां आज भी उनका संबल हैं:

''कोई सड़क राह नहीं सुझाती। राह मेरे पीछे चलती है। सफर ही मंजिल है।''

कभी वह एक शाहना साड़ी पहने अगरबत्ती के पैकेट पर छपी रानी को साकार करती मिलती हैं तो कभी शाख पर चहचहाते बांग्लादेशी दो टका के नोट पर छपे पंछी को, तो कभी हल चलाते हुए मौसम की भविष्यवाणी के साथ छपे कई सूर्यों की रोशनी से दमकते ताजमहल की दिशा में बढ़ते अपने कोलाज 'नाइट जर्नी के' भारतीय किसान को।

मार्जी के कैंसरग्रस्त होने के बाद वाशिंगटन के नेशनल पब्लिक रेडियो (एनपीआर) के नई दिल्ली संवाददाता फिलिप रीव्ज ने मार्च में उनका साक्षात्कार लिया। वह बताते हैं, ''मार्जी ने लोगों के दिलों को छू लिया।'' श्रोताओं की प्रतिक्रिया अभिभूत कर देने वाली थी। एनपीआर की वेबसाइट पर इसे सबसे अधिक हिट मिले। मार्जी की कहानी ऑनलाइन सुनी जा सकती है। उनकी अपनी ब्लॉग साइट है: www.margischarff.blogspot.com □

***डेनियल बी. हेबर** स्वतंत्र पत्रकार हैं और काठमांडो में रहते हैं।*